shrI Sankata Chalisa

सङ्कटाचालीसा

Document Information

Text title : Sankata Chalisa

File name : sankaTAchAlIsA.itx

Category : devii, otherforms, devI, chAlisA, hindi

Location : doc_devii

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Latest update : December 4, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 4, 2022

sanskritdocuments.org

shrI Sankata Chalisa

सङ्कटाचालीसा

दोहा-
जगत जननि जगदम्बिके, अरज सुनहु अब मोर ।
बन्दौं पद-जुग ना सिर, विनय करौं कर जोर ।
चौपाई-
जय जय जय सङ्कटा भवानी ।
कृपा करहु मोपर महरानी ॥

हाथ खड्ग भृकुटी विकराला ।
अरुण नयन गल में रुण्डमाला ॥

कानन कुण्डल की छवि भारी
हिय हुलसे मन होत सुखारी ॥

केहरि वाहन है तव माता ।
कष्ट निवारो जग-जन त्राता ॥

आयुँ शरन तिहारो अम्बे ।
अभय करहु मोको जगदम्बे ॥

शरन आइ जो तुमहिं पुकारा ।
बिन बिलम्ब तुम ताहि उबारा ॥

भीर परी भक्तन पर जब-जब ।
किया सहाय मातु तुम तब-तब ॥

रक्तबीज दानव तुम मारे ।
शुम्भ-निशुम्भ के उदर बिदारे ॥

महिषासुर नृप अति बलबीरा ।
मारे मरै न अति रणधीरा ॥

करि सङ्ग्राम सकल सुर हारे ।
अस्तुति करि तब तुमहिं पुकारे ॥

प्रकटेउ कालि रूप में माता ।
सेन सहित तुम ताहि निपाता ॥

तेहि के बध सब देवन हरषे ।
नभदुन्दुभि सुमन बहु बरषे ॥

रक्षा करहु दीन जन जानी ।
जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥

सब जीवन्ह की हो प्रतिपालक ।
जय जग-जननि दनुजकुल घालक ।
सकल सुरन की जीवनदाता ।
सङ्कट हरो हमारी माता ॥

सङ्कट नाशक नाम तुम्हारा ।
सुयस तुम्हार सकल संसारा ॥

सुर नर नाग असुर मुनि जेते ।
गावत गुणगन निशिदिन तेते ॥

योगी निशिवासर तव ध्यावहिम् ।
तदपि तुम्हार अन्त न पावहिम् ॥

अतुल तेज मुख पर छवि सोहै ।
निरखि सकल सुर नर मुनि मोहै ॥

चरण-कमल में शीश झुकाऊँ ।
पाहि पाहि कहि नितहि मनाऊँ ॥

नेति नेति कह वेद बखाना ।
शक्ति-स्वरूप तुम्हार न जाना ॥

मैं मूरख किमि कहौं बखानी ।
नाम तुम्हार अनेक भवानी ॥

सुमिरत नाम कटै दुःख भारी ।
सत्य बात यह वेद उचारी ॥

नाम तुम्हार लेत जो कोई ।
ताको भय सङ्कट नहिं होई ॥

सङ्कट आय परै जो कवहीम् ।
नाम लेत बिनसत है तबहीम् ॥

प्रेम-सहित जो जपै हमेशा ।
ताके तन नहिं रहे कलेशा ॥

शरणागत होइ जो जन आवैम् ।
मनवाञ्छित फल तुरतहिं पावैम् ॥

रणचण्डी बन असुर संहारा ।
बन्धन काटि कियो छुटकारा ॥

नाम सकल कलि-कलुष नसावन ।
सुमिरत सिद्ध होय नरपावन ॥

षोडश पूजन करै जो कोई ।
इच्छित फल पावै नर सोई ॥

जो नारी सिन्दूर चढ़ावै ।
तासु सोहाग अचल होइ जावै ॥

पुत्र हेतु जो पूजा करहीम् ।
सन्तति-सुख निश्चय सो लहहीम् ॥

और कामना करै जो कोई ।
ताके घर सुख सम्पति होई ॥

निर्धन नर जो शरन में आवै ।
सो निश्चय धनवान कहावै ॥

रोगी रोगमुक्त होइ जावै ।
तव चरणन जो ध्यान लगावै ॥

सब सुख-खानि तुम्हारी पूजा ।
एहि सम आन उपाय न दूजा ॥

पाठ करै सङ्कटा चालीसा ।
तेहि पर कृपा करहिं गौरीसा ॥

पाठ करै अरु सुनै सुनावै ।
वाको सब सङ्कट मिटि जावै ॥

कहँ लगि महिमा कहौं तुम्हारी ।
हरहु वेगि मोहिं सङ्कट भारी ॥

मम कारज सब पूरन कीजै ।
दीन जानि मोहिं अभय करीजै ॥

इति सङ्कटाचालीसा समाप्ता ।

Proofread by Rajesh Thyagarajan

shrI Sankata Chalisa
pdf was typeset on December 4, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*